संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ३४ ● २५ अगस्त, २०१५ श्रावण शुक्ल दशमी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

देश की आजादी के लिए सर्व प्रथम आह्वान करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती थे

देवेन्द्रपाल वर्मा, सभा प्रधान

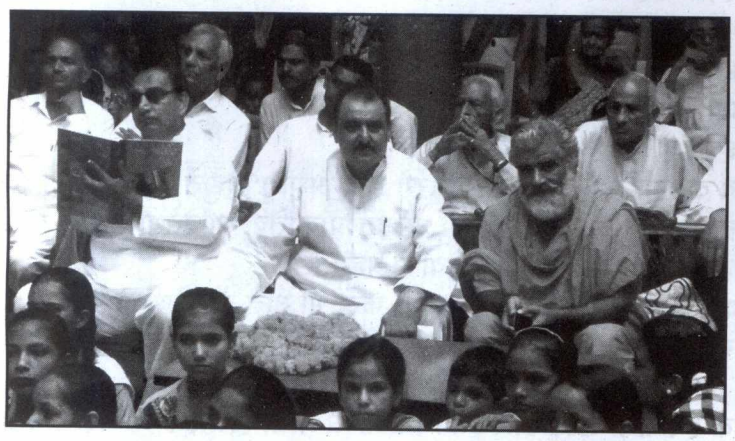

जनसमूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि-आर्य कन्या इण्टर कालेज बुलन्द शहर में *स्वतंत्रता दिवस समारोह* में १५ अगस्त, २०१५ के मुख्य अतिथि के रूप में श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने देश की आजादी के लिए सबसे पहले क्रांतिकारी बलिदानी मन्त्र द्रष्टा तथा आह्वान करने वाले आर्य समाज के संस्थापक एवं वर्तमान युग के कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज थे-उन्होंने १८५७ में *सत्यार्थ प्रकाश* की रचना की। १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। उनका १८५७ से लेकर १८६० तक का इतिहास कहीं नहीं मिलता और यदि कहीं है तो कई विद्वानों ने खोज की-तो १८५७ की क्रान्ति के लिए तैयारी करते हुए मिलता है देश के सैनिकों के स्वाभिमान को जगाने के लिए मिलता है ग्रामीण क्षेत्र में किसानों के आत्मविश्वास के जागरण के लिए मिलता है ऐसे मनीषी युगपुरुष के शिष्य होने का हमें सौभाग्य प्राप्त है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा है।

''विदेशी राजा चाहे कितना भी अच्छा हो स्वदेशी राजा से अच्छा नहीं हो सकता।

स्वदेशी राजा सर्वोपरि है। स्वामी जी के विचारों का प्रभाव आर्य समाज के सदस्यों एवं युवा क्रान्तिकारियों पर भी पड़ा और उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना बलिदान दिया हंसते हंसते फाँसी के फन्दे को चूम लिया गोलियां खाई लेकिन घबराये नहीं भारत माता की जय बोलते बोलते शहीद हो गए तब जाकर कहीं यह १५ अगस्त का दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ आज हम स्वतन्त्रता की ६८वीं वर्षगांठ मना रहे हैं यह हमारे गुरूवर महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा का सुपरिणाम है। अतः इस शुभ अवसर पर मैं उन्हें नमन करता हूँ। उन्होंने नारी शिक्षा के लिए अभियान चलाया ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रदेवता'' के आधार पर नारी सम्मान के लिए संस्कार प्रदान किये शिक्षा के लिए आर्य समाज ने स्थान स्थान पर जहां भी आर्य समाजों की स्थापना हुई वहीं आर्य कन्या पाठशाला की भी स्थापना की गई। उ.प्र. में लगभग ४०० आर्य कन्या विद्यालय हैं उनमें एक विशिष्ट स्थान आर्य कन्या इण्टर कालेज, बुलन्दशहर का भी है जहां वैदिक संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाता है आज यहां के कार्यक्रम देखकर मन अतीव प्रसन्न है यहां की आचार्या श्रीमती अनिता भारद्वाज एवं सभी शिक्षिकायें धन्यवाद की पात्र हैं हमारे प्रबन्धक/प्रशासक श्री सुमन जी राघव एवं अध्यक्ष श्री सन्तोष राघव जी को भी मैं बधाई एवं शुभ कामनायें प्रदान करता हूँ जो इतना सुन्दर भव्य कार्यक्रम आयोजित कराया-अनुशासन तथा बच्चों के कार्यक्रम प्रशंसनीय रहे।

आचार्य देवव्रत जी हिमांचल प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त

आर्य जगत् के गौरव एवं गुरूकुल परम्परा के संवाहक वैदिक विद्वान गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य डॉ. देवव्रत जी को हिमांचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त होने पर पूरे आर्य जगत् में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से आपको शतशः बधाई आपके दीर्घायु की कामना करते हैं।

अहोभाग्यम् - सुस्वागतम् - यशस्वी भव के साथ
हम हैं आपके-

देवेन्द्रपाल वर्मा सभा प्रधान
डॉ. धीरज सिंह कोषाध्यक्ष
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभामंत्री

आर्य कन्या इण्टर कालेज-बुलन्दशहर में महर्षि दयानन्द सरस्वती कक्ष का लोकार्पण

१५ अगस्त-२०१५! आर्य कन्या इण्टर कालेज बुलन्दशहर में स्वतन्त्रता दिवस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कक्ष का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष डॉ. धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा किया गया। इससे पूर्व सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के सान्निध्य में अनुराग शास्त्री द्वारा राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी जी ने सभी यज्ञ प्रेमियों एवं यजमानों को शुभ आशीर्वाद प्रधान किया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि सभा प्रधान जी का जोरदार भव्य स्वागत किया गया तथा सभा प्रधान जी एवं सभा मन्त्री जी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर राष्ट्र के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की भारत माता को बन्धन मुक्त दिवस पर कृतज्ञता व्यक्त की दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन किया। आर्य कन्या इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या श्रीमती अनिता भारद्वाज के नेतृत्व में बच्चों ने स्वागत एवं सांस्कृतिक-सामाजिक तथा देश भक्ति के कार्यक्रम प्रस्तुत कर जनता का मन मोह लिया तत्पश्चात् मन्च पर मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न एवं शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने विशिष्ट अतिथि के रूप में आने वाली पीढ़ी के निर्माण के लिए अपने विचार प्रस्तुत किये स्वामी जी ने बताया कि पिता की पहिचान पुत्र से एवं गुरू की पहिचान शिष्य से होती है इसी प्रकार राजा की पहिचान राज्य की व्यवस्था एवं शिक्षा खुशहाली से होती है आर्य कन्या इण्टर कालेज बुलन्द शहर में छात्रयें गुरूजन अभिभावक गण आर्य समाज के अधिकारीगण सभी को बधाई देते हैं जो कालेज में यज्ञ शाला बनवा रहे हैं आर्य समाज की ओर से स्वागत करने वालों में श्री संजीव रामा, श्री शान्तिशरण राठी, श्री सुशील आर्य, श्री बनारसीदास, धीरज आर्य, श्री शिव कुमार आर्य, विजय सिंह, अमरजीत सिंह, गणेशदास गोयल, निरंकार सिंह, घनश्याम दास सक्सेना, संजय वर्मा, अनूपशहर, वीरेन्द्र सिंह, सिकन्द्राबाद से सौरभ, भूपेन्द्र कौशल ऋषिपाल आर्य आदि-आदि मुख्य थे, सभा अध्यक्ष डॉ. धीरज सिंह आर्य ने वर्तमान समिति के कार्यों की प्रशंसा की अल्पकाल में यह उन्नति प्रशंसनीय है भविष्य में भी इसी प्रकार उत्साहित होकर आर्य संस्कृति को बचाने एवं बढ़ाने संरक्षण करने पर विशेष उत्तरदायित्व का पालन समिति करती रहेगी। महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित आर्य समाज के कार्यों में उत्साहित श्री संजीवरामा को भामाशाह की उपाधि देकर सम्मानित किया। अन्त में आर्य जनता छोटे-छोटे बच्चे, शिक्षकवर्ग तथा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि समिति के अधिकारियों को धन्यवाद प्रदान किया। सुमन राघव जी प्रबन्धक ने भी सभी का आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय पर्व की शुभकामनायें प्रदान कीं।

देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान/संरक्षक
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री/प्रधान सम्पादक
आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक

सम्पादकीय.....

शिक्षा व्यवस्था बिना बदले सर्वांगीण राष्ट्रोन्नति असंभव

सदियों की पराधीनता से हमारा राष्ट्र-जो विश्व में सोने की चिड़िया कहा जाता था-दीन हीन हो गया। पहले विदेशी आक्रान्ता यवनों ने हमारी सम्पदा लूटी हमें कंगाल बनाया उनके बाद धूर्त अंग्रेजों ने-जो हमारे देश में व्यापारी बनकर आये थे- हमारी सारी व्यापारिक व्यवस्था को ध्वस्त करके हमें कंगाल बनाया, हमारे शासक बने, शासन में क्रूरता की हद पार कर दी, हमें सदैव अपना गुलाम बनाये रखने के लिए हमारी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था-जो मानव को निर्माण करके राष्ट्र को समृद्ध बनाने का मार्गदर्शन देती थी वह पूरी तरह से लार्ड मैकाले की सहायता से ध्वस्त करके हमें सदैव दास बनाये रखने की शिक्षा व्यवस्था चलायी। उस शिक्षा में रोजी रोटी कमाने के उपाय तक ही हम सीमित हो गये। चरित्र निर्माण का मार्गदर्शन ध्वस्त हो गया।

हमारा प्राचीन इतिहास नष्ट कर दिया। कृत्रिम इतिहास कम्युनिस्टों की सहायता से बनाकर पढ़ाना आरम्भ कराया। जिसमें देशवासियों को लड़ाने के लिए दो खेमों में बड़ी चतुराई से आर्यो को विदेशी और आदिवासी को मूल निवासी बताकर आपस में ही मतभेद कराने का षडयंत्र रचा। भारत को अशिक्षित बताकर सारी शिक्षा का स्रोत विदेशों को बताकर हमें अपमानित करना प्रारम्भ किया हम ठगे से रह गये और उसी शिक्षा से अपने को शिक्षित मानने लगे और पराधीनता के दंश को झेलते रहे। बाल विवाह हो रहे थे, विधवाओं को पति की लाश के साथ जिन्दा जलाने की प्रथा भी चालू हो गयी थी।

हमारे कुछ पूर्वजों-राजा राममोहन राय, श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर व श्री केशवचन्द्र सेन आदि ने इसके विरूद्ध आवाज उठायी। परंतु विदेशी शिक्षा के प्रति उनका लगाव बना रहा, उसी के माध्यम से देशोन्नति देख रहे थे। उसी काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती का कार्यक्षेत्र में आगमन हुआ। देश पराधीन था, नारी जाति पूरी तरह से पददलित थी, उसका अस्तित्व नष्ट प्राय था, ढोंग पाखण्ड जोर शोर से जन सामान्य में फैलकर परस्पर द्वेष भाव उत्पन्न करा रहे थे। जाति प्रथा आपस में सभी को तोड़ रही थी। वेद ज्ञान लुप्त हो गया था। विदेशी वेदों को गड़रियों के गीत कहकर अपनी शिक्षा संस्कृति का प्रसार कर रहे थे। पुराणपंथी धर्म का स्वरूप बिगाड़ कर हमें धर्मभीरू बना रहे थे। महर्षि दयानन्द ने कार्य क्षेत्र में उतरते ही पराधीनता के मूल में सारे दोषों की जड़ में वेदज्ञान के अभाव को पाया। उन्होंने प्रबल आवाज लगाकर हमें वेद के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया। वेद के ज्ञान के अनुरूप जीवन शैली को धर्म बताया। सत्य वैदिक धर्म के प्रचार के लिए आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज को आन्दोलन नाम दिया और कहा कि यह कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं है। यह आन्दोलन है। आर्य समाज आन्दोलन निरंतर चलते रहना चाहिए। आन्दोलन तीव्र गति से चला। अनेक गुरूकुल खुले जिसमें राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत शिक्षा से स्नातक तैयार होने लगे। स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें आर्य नर नारियों ने भारी संख्या में भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया।

स्वाधीनता के बाद जिन नेताओं के हाथ में सत्ता आई उन्होंने राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति पर ध्यान न देकर केवल भौतिक समृद्धि पर ध्यान केन्द्रित कर लिया, फलतः भौतिक समृद्धि उत्तरोत्तर प्रगति पर है परंतु वही विदेशी शिक्षा के प्रसार से (जिसमें हमें सदैव पराधीन रहने की ही घूटी समाविष्ट है) देश का चारित्रिक ह्रास होने लगा। युवा पीढ़ी ने दिग्भ्रमित होकर भोगवादी जीवन शैली को ही जीवन शैली मानकर जीना प्रारम्भ किया। बालक बालिकायें डिग्रीधारी तो खूब बन रहे हैं परंतु चरित्र हीनता शिखर पर जा रही है। कोई भी लड़की या महिला (उम्र कोई भी हो) उसकी शिकार हो रही है। सामूहिक बलात्कार फिर उनकी हत्यायें आम बात हो रही है। अखबारों में वीभत्स खबर तो छप जाती है परंतु शायद ही ऐसे अपराधी पकड़े जाते हो या उन्हें दंडित किया जाता हो। धन लिप्सा ऐसी बढ़ रही है कि-कुछ भी करना पड़ें परंतु धन हमारे पास आये, फलतः व्यक्ति धनवान हो रहा है परंतु देश निर्धन हो रहा है।

देश के सभी विचारक राष्ट्रचिन्तक इस पर गंभीर चिंतन करें। मेरी दृष्टि में जब तक यह विदेशी शिक्षा नहीं बदली जायेगी कल्पित इतिहास नहीं बदला जायेगा तब तक सुधार असंभव है। हमें अतिशीघ्र अपने प्राचीन गौरवशाली इतिहास को विद्यालयों में पढ़ाने की व्यवस्था करनी चाहिए। सुधी इतिहासज्ञों की टीम तैयार की जाये। सत्य इतिहास की खोज करके उसे लेखबद्ध करके पाठ्यक्रम में स्थापित किया जाये। शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा के ओजपूर्ण पूर्व के अध्यायों को जोड़ा जाये। निश्चय ही ऐसा करने से परिवर्तन आयेगा। युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित होने से बचकर राष्ट्रीय जीवन शैली बनाने में प्रवृत्त होगी। धीरे धीरे बुराइयां नष्ट होंगी और हमारा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुँचकर सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शक बनेगा और महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार होगा।

सम्पादक

वैदिक विज्ञान की मान्यताएं-७

-कृपाल सिंह वर्मा

६३. परमात्मा ने कल्याणकारी शक्तियों, प्राकृतिक शक्तियों अर्थात देवों को उत्पन्न किया। यह संसार पहले अव्यक्त था। यह नाम तथा रूप से ही व्यक्त हुआ।

६४. प्राण संसार की वस्तुओं में इस प्रकार व्याप्त है जैसे म्यान में तलवार। वायु से प्राण तथा प्राणों से अग्नि उत्पन्न होती है।

६५. जब खिंचता है तो इसका नाम प्राण है। जब प्राण बोलता है तो आंख हो जाता है सुनता है तो कान हो जाता है सोचता है तो मन हो जाता है। ये प्राण के कर्म संबंधी नाम है।

६६. प्राण अर्थात् चेष्टा करना चेतन का गुण है। आत्मा का गुण है। ये सब प्राण आत्मा में एक हो जाते हैं। यह जो आत्मा है वही सबके पाने योग्य है। आत्मा को ही प्रिय जानना चाहिए।

६७. पहले ब्रह्म ही था। उसने क्षत्र संबंधी देवताओं को उत्पन्न किया। क्षत्रिय देवता हैं-१. इन्द्र २. वरूण ३. सोम ४. रूद्र ५. पर्जन्य ६. यम ७. मृत्यु ८. ईशान। इसलिए क्षत्रिय से परे कोई नहीं। राजसूय यज्ञ में ब्राह्मण नीचे स्थित होकर क्षत्रिय की उपासना करता है। उसको पर्याप्त न जंचा। उसने वैश्य देवताओं को उत्पन्न किया जिन्हें गणेश कहते हैं। जो गण अर्थात समूह के रूप में रहते हैं। ये क्षत्रियों के आश्रित होते हैं ये निम्न है-

१. वसु- वसु आठ है। ये अग्नि वरुण के आश्रित हैं।
२. रूद्र- ये ग्यारह होते हैं। ये आत्मा के आश्रित है।
३. आदित्य- सूर्य के तापयुक्त प्रकाश को कहते है। यह सूर्य के आश्रित हैं।
४. विश्वदेव- सूर्य किरणों को कहते हैं। यह सूर्य के आश्रित है।
५. मरूत- इलेक्ट्रो मैग्नेटिक वेव को कहते हैं। चुम्बकीय तरंगे इन्द्र अर्थातृ विद्युत धारा के आश्रित होते हैं। इतना उसको पर्याप्त न जंचा। उसने शूद्र देवता अर्थात् प्राकृतिक शक्तियों को उत्पन्न किया। वे हैं-पूषा- पोषण करने वाली अर्थात पृथ्वी। अग्नि देवों में ब्रह्मा है।

६८. जो ज्ञान को न रख के महान पुण्य कर्म करता है उसका फल भी अंत में क्षीण हो जाता है। इसीलिए आत्मलोक की ही उपासना करनी चाहिए। जो आत्मलोक की उपासना करता है उसके कर्म क्षीण नहीं होते। देवयाजी से आत्मयाजी श्रेष्ठ होता है।

६९. यह आत्मा सब भूतों का लोक है। सभी लोक आत्म-कामनाओं से प्राप्त होते हैं। जो यज्ञ करता है उसी से देवलोक को बनाता है। जो अध्ययन करता है उससे ऋषिलोक को पतरों की पूजा करता है उससे पितृलोक को बनाता है। देवों के जन्मदाता तथा कर्मो से महान बनने वालों को पितर कहते हैं। जो मनुष्यों को भोजन देता है उससे मनुष्य लोक बनता है।

७०. मन पुरूश वाणी स्त्री है। प्राण सन्तान है। श्रोत्र देवी सम्पत्ति है। आत्मा इसका यज्ञ है।

७१. जिस क्रिया के द्वारा हृदय से मुखनासिका तक श्वास, प्रश्वास, वायु की क्रिया साधित होती है उस क्रिया का नाम प्राण है। जिस क्रिया के द्वारा परिचालक वायु नाभि से पाद उंगली तक रस रक्त आदि को वहन करके परिव्याप्त करता है उसी क्रिया का नाम अपान है। जो क्रिया नाभि देश को वेष्टन करके भुक्त वस्तुओं के परिपाक मल मूत्र आदि को पृथक करके रक्त आदि का उत्पादन करके यथास्थान ले जाती है उस क्रिया का नाम समान है। जो क्रिया ग्रीवा से मस्तक-चूड़ा तक सब दैहिक उपादानों को ऊपर की ओर धारण करके स्थिर है उसी क्रिया का नाम उदान है। जो क्रिया सर्वशरीर की सिराओं में संचरण करके बल रक्षा करती है उसी क्रिया का नाम व्यान है।

७२. शब्द तन्मात्र से आकाश उत्पन्न हुआ।

१. शब्द तन्मात्र से सात्विक अंश से ज्ञानेन्द्रिय श्रोत्र, राजसिक अंश से कर्मेन्द्रिय वाक् तथा तामसिक अंश से प्राण उत्पन्न हुए।

२. इसी प्रकार स्पर्शतन्मात्र से वायु उत्पन्न हुआ। उस स्पर्शतन्मात्र के सात्विक अंश से ज्ञानेन्द्रियत्वक् राजसिक अंश से कर्मेन्द्रियां पाणि (हाथ) तथा तामसिक अंश से उदान उत्पन्न हुए।

३. इसी प्रकार रूप तन्मात्र से तेज उत्पन्न हुआ। उस रूप तन्मात्र के सात्विक अंश से ज्ञानेन्द्रिय चक्षु, राजसिक अंश से कर्मेन्द्रिय पायु और तामसिक अंश से व्यान उत्पन्न हुए।

४. इसी प्रकार रस तन्मात्र से आप उत्पन्न हुआ। उस रसतन्मात्र से सात्विक अंश से ज्ञानेन्द्रिय रसना, राजसिक अंश से कर्मेन्द्रिय पासु और तामसिक अंश से अपान प्राण उत्पन्न हुए।

५. इसी प्रकार गंधमात्र से पृथ्वी उत्पन्न हुई। उस गंधमात्र के सात्विक अंश से ज्ञानेन्द्रिय

शेष पेज ८ पर देखें....

वेदामृतम्

अग्ने विवस्वदुषसश् चित्रं राधो अमर्त्य।
आ दाशुष्वे जातवेदो वहा त्वम्, अद्या देवाँ उषर्बुधः।।

(अमर्त्य) हे अमर! (जातवेदः) हे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वप्रकाशक (अग्ने) अग्रणी, तेजस्वी परमात्मन्! (त्वम्) तू (दाशुषे) आत्मसमर्पणकर्ता के लिए (अद्य) आज (उषसः) उषा के (विवस्वत्) तमस् का विवासन करने वाले (चित्रं) अद्भुत (राधः) ऐश्वर्य को (उषर्बुधः) उषःकाल में उद्बुद्ध होने वाले (देवान्) देवों को (आ वह) प्राप्त करा।

वाह्य जगत् में आदित्य रूप जातवेदस् अग्नि प्राकृतिक उषा के अनुपम प्रकाश को प्रदान करता है। रात्रि के निविड अंधकार का विवासन करने वाली उषा की ज्योतिरमयी किरणें हमें नवीन स्फूर्ति और उद्बोधन प्रदान करती है। उषा की बेला हमारे अन्दर पवित्र विचारों को और अनेक दिव्य गुणों देदो को उत्पन्न करती है।

किंतु हम जिस उषा के चित्र-विचित्र ऐश्वर्य की याचना और आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं वह इस प्राकृतिक उषा से विलक्षण कोई अन्य ही उषा है।

हे अमर अग्निदेव! तुम आज मुझे उषर्बुध देवों का भी सानिध्य प्राप्त कराओ। दिव्य उषा के प्रकाश से तमःपुंज के विलीन हो जाने पर समस्त देव मैं पहले मैं पहले की रट लगाते हुए मेरे अन्तःकरण में अवतीर्ण हो जांए। वैदिक मित्र देव मैत्री का, वरूण देव पाप निवारण का, सविता देव शुभ्र प्रेरणा का, पूषा देव पुष्टि का, विष्णु देव व्यापकता एवं उदारता का, इन्द्र देव वीरता का, रूद्र देव रौद्रता का, सोम देव सौम्यता एवं पवित्रता का, पर्जन्य देव वर्षा का, बृहस्पति देव ज्ञान का, त्वष्टा देव कला-नैपुण्य का, प्रजापति देव प्रजापतित्व का, वायु देव गतिमयता का, अश्विनौ देव परोपकार का संदेश देते हुए हृदय को दिव्य गुणों का धाम बना दें। हे अग्नि प्रभु! तुम मेरे ओर देवों के बीच में दूत बनो, मेरे अध्यात्म यज्ञ में देवों का आवाहन करो। हे उषर्बुध देवों! मेरे हृदय में उषा खिल चुकी है, अब तुम भी उद्बुद्ध होने में विलम्ब न करो।

डा. रामनाथ वेदालंकार

धरोहर.....

दिव्य आत्मा के धनी अमर बलिदानी-

पं. नरेन्द्र जी हैदराबाद

(स्वामी सोमानन्द सरस्वती)

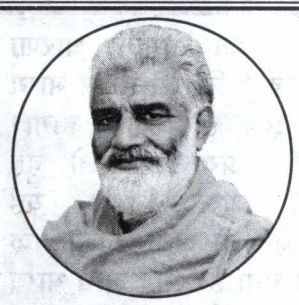

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

मध्यम कद, चेहरे पर ओजस्विता, वाणी में गंभीरता, चाल में मस्ती, सिर पर गांधी टोपी, सुन्दर भव्य चेहरा, धोती एवं कुर्ता पहने चश्मा लगाकर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की तरह लगने वाले शोभायमान आकृति से आबालवृद्ध प्रभावित होते थे दूसरों की सेवा करने में तत्पर प्रसन्नता मानों मन का श्रृंगार था, भाषण में ओजस्विता का पुट लिए जनमानस के हृदय को अपनी आभा से प्रभावित करने वाले पं. नरेन्द्र जी हैदराबाद को कौन आर्य नहीं जानता? वे युवक हृदय सम्राट थे, वे असहायों के सहारा थे, वे दीनों के प्राण थे, वे हिंदुओं के और आर्यो के रक्षक थे। आशाभरी दृष्टि से लोग इन्हें सम्मान प्रदान करते हुए छत्रपति शिवाजी के रूप में निहारते थे, वे छोटे कद के होकर भी बड़े थे, वे साँवले कद के होते हुए भी उज्जवल चरित्र के थे, वे राजनैतिक होते हुए भी सच्चे संत थे, वे वृद्धावस्था में भी युवा हृदय थे वे सामान्य होते हुए भी विशेष थे, वे महान होकर भी जन सामान्य की आंखों के तारे थे, वे सदैव निराश लोगो के लिए आशा का सम्बल थे। जैसे लाला लाजपत राय जी को पंजाब केसरी की उपाधि से विभूषित किया गया, सरदार पटेल जी एवं स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी सरस्वती को लौह पुरूष कहकर सम्मान दिया गया उसी प्रकार स्वनाम धन्य पं. नरेन्द्र जी को हैदराबादी शेर की उपाधि देकर सम्मानित किया गया। वास्तव में वे इस पद के योग्य भी थे। निजाम राज्य की जड़ों को हिलाने वाले, निजाम नवाब उस्मान अली की नींद को उड़ाने वाले जनमानस में क्रांति के शंख को फूंकने वाले, पं. नरेन्द्र जी महाराणा प्रताप की तरह स्वाभिमान के पुंज थे। उन्होने जो अपना इतिहास बनाया है वह आने वाली पीढ़ी को सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। उनमें सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि जो एक बार उनके सम्पर्क में आ गया वह सदैव उनका भक्त बन गया।क्योंकि आप कार्यकर्ता को भी पूरा सम्मान प्रदान करते थे। मुझे स्मरण आ रहा है कि जब मैं शास्त्री कक्षा में सिरसागंज मैनपुरी गुरूकुल में पढ़ रहा था तब वहां आर्यवीर दल का ग्रीष्म कालीन शिविर लगा था। वर्ष १९७२-७३ सत्र में श्री काशीनाथ शास्त्री जी एवं रामसिंह आर्य व्यायाम शिक्षक हमें व्यायाम सिखाने गए थे तथा समापन पर दीक्षान्त भाषण देने एवं प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए तत्कालीन प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली से पं. नरेन्द्र जी हैदराबाद गए थे। उनके स्वागत की तैयारियां कई दिनों से चल रही थी, मुझे शाखा नायक का उत्तरदायित्व मिला था अतः सारी देखरेख योजनाओं में मेरी सहभागिता रहती थी। लाठी एवं भालों के बीच से तलवारों की छाया में उनका मुख्यद्वार पर भव्य अभिनन्दन किया था।

गार्ड आफ आनर देने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ था। उसके पश्चात् उनकी सेवा करने का भी सौभाग्य मिला। परिचय के समय जब उन्हें बताया कि मैं गुरूकुल ततारपुर में पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ के चरणों में रहकर पढ़ा हूँ सुनकर वे अतीव प्रसन्न हुए उन्होंने बताया कि स्वामी जी हमारे बड़े गुरूभाई है और हैदराबाद सत्याग्रह के समय हमें उनका सान्निध्य एवं सहयोग १९३९ में प्राप्त हुआ है तथा बाद में भी सुल्तानपुर-हैदराबाद आकर हमें प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। और वार्तालाप में उनका आत्मीय भाव जागृत हो उठा मुझे स्नेहिल भाव से आशीर्वाद दिया उन क्षणों को मैं कभी भूल नही सकूंगा, वे क्षण मेरे जीवन के अमूल्य उपहार हैं उनके हृदय से निकली वाणी ही मेरे लिए ऊर्जा बन गयी बोले दिल्ली आये तो अवश्यमेव मिलना। सायंकाल तक लगने लगा था कि जैसे मैं पुराने समय से परिचित हूँ और उनके प्रति श्रद्धा के भाव जागृत हो उठे थे।

वर्ष १९७३ मई मास में श्री पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी ने प्रांतीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया जिसके संयोजक आदरणीय पं. नरेन्द्र जी हैदराबादी ही थे आर्य वीर दल के सैनिकों के साथ मैं सम्मेलन में आया था। यहां जब संयोजक के रूप में आपको देखा तो जैसे घर में ही आ गए। आपने भोजन-आवास आदि की सभी व्यवस्थायें शीघ्र सम्पादित कर दी थी और सेवा व्यवस्था के लिए अपने नियंत्रण में रखकर हमारा मार्ग दर्शन किया था, आपके नेतृत्व में आरक्षित हम सभी आर्य वीर जहां आवश्यकता होती वहीं जाकर व्यवस्था संभाल लेते थे। वह अनुभव आज तक हमारा सम्बल बनकर ऊर्जा प्रदान करता है वह क्षण हमारे लिए विशेष अनुभूति का था प्रत्येक कार्य को कराने का, समझाने का उपाय सरल था। कार्य होने तक दिशा निर्देश देना, खड़े रहना, बीच बीच में निरीक्षण करना, सलाह देना, कार्य बिगड़ने पर क्रोधित न होना, प्यार से कार्यकर्ता का मनोबल बढ़ाना, इच्छा शक्ति को सुदृढ़ करना, बहुत सारी विशेषताओं के पुंज थे पं. नरेन्द्र जी। आप सदैव बच्चों को अतीव स्नेह प्रदान करते थे, कमर पर स्नेहिल थपकी लगाकर हमेशा उत्साहित करते थे। उस सम्मेलन की बहुत स्मृतियां मुझे याद है जैसे इन्द्रप्रस्थ के यज्ञ में श्री भीष्म पितामह ने अर्ध्य देने के लिए सर्वोच्च स्थान श्री कृष्ण जी को प्रदान किया था उसी प्रकार सम्मेलन सूत्रधार श्री पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी ने सम्मेलन की सफलता का पूर्ण श्रेय पं. नरेन्द्र जी को प्रदान करके आप की प्रशंसा की थी और आपको सम्मानित किया था और पूरे वातावरण को करूण रस से परिपूर्ण कर दिया था आपकी हैदराबाद की वीरतापूर्ण घटनाओं को सुनकर सम्पूर्ण आर्य जनता की आंखे एक बार श्रावण मास की तरह से दिखाई देने लगी थी। लेकिन लौकैषण्ण पर विजय प्राप्त करने वाले पं. नरेन्द्र जी ने सदैव सेवा को ही महत्व प्रदान किया जिसका सुखद परिणाम रहा कि मेरठ-कानपुर-वाराणसी उ.प्र. के तीनों महासम्मेलनों में मुख्य संयोजक बनने का सौभाग्य आपको ही प्राप्त हुआ और आपने सम्मेलनों की सफलता के लिए अपना तन-मन-धन पूर्ण समय अर्पण कर दिया।

आप की ओजस्वी वाणी का भाषण सुनकर पुराने लोगो से सुना कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की तरह कड़कती आवाज है। गुरूकुल सिरसागंज शिविर समापन के पश्चात् रात्रि में पूज्य गुरू जी ने सिरसागंज कस्बे में मण्डी में निश्चित कर दिया था क्योंकि लोगों की इच्छा थी कि ऐसे क्रांतिकारी भाषण से युवा पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त कर सके। आपका यह रात्रि का भाषण आज भी लोगों के हृदय पटल पर अंकित है। सिरसागंज के पुराने आर्य म. विद्याराम जी आर्य जो ओम शरण जी आर्य के पिताश्री थे उन्होंने बताया कि इस नगर में ऐसा क्रांतिकारी भाषण पहली बार हुआ है। हमारा नगर तो धन्य हो गया। ऐसे क्रांतिकारी हैदराबादी शेर की सिंह गर्जना से अनार्यो के हृदय कंपित हो उठते थे। सरकार में भी आपका अच्छा प्रभाव था। आपको नवाब ने जेल में यातनायें दी लेकिन सच्चा आर्य अपने पथ से विचलित नहीं हुआ नवाब को हैदराबाद छोड़कर ही जाना पड़ा और जेल रूपी पिंजड़े से छूटकर स्वतंत्र हो गये। वहां की सरकार एवं केन्द्रीय सरकार ने आपका भव्य अभिनन्दन किया था। कुछ दिनों के पश्चात आपने ब्रह्मचर्य से सीधे सन्यास आश्रम में प्रवेश ले लिया और स्वामी सोमानन्द सरस्वती नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की। आपका जीवन एक पवित्र जीवन रहा। राजनीति के शिखर पर जाने के बाद अपनी प्राचीन आश्रम व्यवस्था को सम्मान प्रदान कर आर्य नेताओं-कार्यकर्ताओं को संदेश भी प्रदान किया है कि अपनी कथनी और करनी एक करो। आश्रम परम्परा का पालन कर अपनी मर्यादा एवं संस्कृति की रक्षा के लिए जीवन समर्पण ही सच्चे आर्य की पहचान है। उनकी जन्म शताब्दी प्रेरणा लेकर आई है। पं. नरेन्द्र जी के विषय में १९४७ में तत्कालीन गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा था-कि आर्य समाज द्वारा संचालित हैदराबाद आन्दोलन से जो वातावरण बना है उसी के कारण हमें निजाम हैदराबाद पर विजय प्राप्त करने में शीघ्र सफलता मिली है ऐसे जननायक पं. नरेन्द्र जी को कारावास में कठोर यातनायें दी गयी लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का सच्चा सिपाही उनका मानस पुत्र लौह पुरूष स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी का प्रिय शिष्य वीर बन्दा बैरागी की तरह, अमर क्रांतिकारी पं. राम प्रसाद बिस्मिल की तरह यातनाओं से किंचित भी विचलित नहीं हुआ और धैर्य के साथ अपने आत्मा की अमरता को जानते हुए प्रसन्नता से उसे स्वीकार किया। भगवान श्री कृष्ण की गीता के ज्ञान को हृदयंगम किया। उनका संकल्प जागृत हुआ और आन्दोलन सत्याग्रह सफल हुआ।

जननायक के रूप में लोगो ने तब स्वीकार किया था जब आप जेल से छूटकर आये थे विशाल जुलूस के रूप में जय जयकार करते हुए लोगो ने आपके उपकार का स्मरण किया थाा आपके विषय में आर्य जगत् के जाज्वलयमान नक्षत्र ओजस्वी प्रमाणिक विद्वान लेखक इतिहास मर्मज्ञ श्रद्धेय श्री पं. राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर ने जो लिखा है वह तो कोई और लिख ही नहीं सकता। मेरा तो प्रयास मात्र उनके जीवन से आने वाली पीढ़ी कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सके जो इतनी यातनाओं में भी धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष में पीछे नहीं हटे क्या वह घटनायें हमें फतेहसिंह, जोरावर सिंह, हकीकत राय अथवा क्रांतिकारियो की यातनाओं का स्मरण नहीं कराती? ऐसा जीवन हमारे लिए प्रेरणा पुंज बनकर सदैव उत्साहित करता है। आज के वातावरण को देखते हुए ऐसे प्रेरणाकलश समय समय पर स्थापित हो और उनके जीवन की घटनायें आर्य समाज के उत्सवों में, विद्यालयों में, गुरूकुलों में सुनाई जाये। धर्म रक्षा एवं वैदिक परम्परायें तभी सुरक्षित रह सकती है। स्वामी सोमानन्द सरस्वती बनकर लम्बे समय तक हमें आशीर्वाद नहीं दे पाये अन्यथा आर्य समाज में एक नई क्रांति का सूत्रपात होता जो आज स्वर्ण युग बन जाता। स्वामी सोमानन्द सरस्वती जी के इस नाम का इसलिए प्रचार भी नहीं हो सका। अतः पं. नरेन्द्र जी के नाम का ही विशेष प्रभाव आज लोगो के हृदय पर है उनका बचपन दादा गुरू पूज्य स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी के सान्निध्य में पारसमणि बना और फिर समाज सेवा में तपस्या से निखार पैदा किया तब सन्यास लेकर सोम तत्व में आनन्द को प्राप्त कर सके। उनका जीवन सफल हो गया। हमें भी ऐसे आर्य वीर शिरोमणि क्रांतिकारी धर्म रक्षक के जीवन से प्रेरणा लेकर संकल्प लेना चाहिए। आर्य समाज में आई निराशा को दूर करने के लिए सोई हुई आर्य जनता को जागृत करने के लिए आज फिर पं. नरेन्द्र जी जैसे आर्य वीर सेनानी की आवश्यकता है जो सिंहनाद कर पुनः आर्य समाज को नवजीवन प्रदान कर सकें। प्रभो! ऐसी पवित्र आत्मा इस धरा पर भेजकर पुनरोद्धार करो। हमें भी ऐसी शक्ति प्रदान करो।

संचालक- गुरूकुल पूठ-
गढ़ मुक्तेश्वर
हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

भाग्य या कर्मफल

प्रताप कुमार साधक

एक सामान्य धारणा बन गई है कि जो हमारे भाग्य में लिखा होगा वही होगा। कैसा भी प्रयास कर लो, वह टलने वाला नहीं। यह अतिविश्वास अंधविश्वास तक पहुँच गया है, और लोग भाग्य तथा कर्म में भेद को भुलाकर स्वतः किए दुष्कर्म को भी भाग्य का लेखा समझ रहे हैं। किसी व्यक्ति द्वारा की गई हत्या, डकैती या बलात्कार जैसी घटना को भी ईश्वर की मर्जी मान रहे हैं। सांत्वना देने वाले लोग बड़ी सहजता से कह देते हैं कि ईश्वर को यही मंजूर था। क्या ईश्वर किसी को हत्या या दुष्कर्म करने का परमिट देता है?

आइये पहले यह विचार करते हैं कि भाग्य क्या है? वस्तुतः उचित-अनुचित में भेद कर सकने वाला विवेकज ज्ञान होने से मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र होता है। इसीलिए सभी मनुष्यों का आहार, व्यवहार एक जैसा नहीं होता। मनुष्य का आहार शाकाहारी भी होता है और भयंकर मांसाहारी भी होता है। दयालु स्वभाव का होता है तो अत्यंत निर्दयी भी होता है। देव भी बन जाता है तो राक्षस भी । किंतु पशु पक्षियों में ऐसा अंतर नहीं होता। उनके आहार और स्वभाव निश्चित होने से वे तदनुसार ही व्यवहार करते हैं। उन्हें कर्म करने की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं होती, क्योंकि वे स्वाभाविक ज्ञान के अतिरिक्त स्वेच्छा से कुछ सीख नहीं सकते। उदाहरण स्वरूप - शेर घास नहीं खा सकता तो गाय मांस नही खा सकती। ये सभी योनियां भोग योनियां कहलाती हैं, जिनमें जीव को दण्ड भोगने के लिए परम न्यायाधीश ईश्वर द्वारा भेजा जाता है। मनुष्य योनि उभययोनि है जिसमें जीव पूर्वकृत कर्मो के फलों को भोगता भी है और नूतन कार्य करता है। इन कर्मो का दायित्व पूर्णतः जीव पर ही होता है, अतः उसका परिणाम तथा फल भी उसे ही भोगना होता है- चाहे वर्तमान जन्म में या आगामी जन्मों में। ये कर्म ३ प्रकार के हो सकते हैं- १. पुण्य कर्म २. अपुण्य कर्म ३. पापपुण्य मिश्रित कर्म। ये तीनों सकाम कर्मो के भेद है जिन्हें सांसारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु किया जाता है।

कर्मफल ३ रूपों में प्राप्त होता है- जाति, आयु और भोग। योगदर्शन का सूत्र २-१३ है- 'सति मूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः।' जाति का अर्थ है योनि। कुत्ता, बंदर, कबूतर, सिंह, सर्प, मक्खी तथा मनुष्य आदि जातियां है (समान प्रसवः जातिः) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि जातियां नहीं है वरन् वर्ण है जो योग्यतानुसार वरण किये जाते हैं, चुने जाते हैं। जातियाँ ईश्वर द्वारा बनाई गई हैं, जिन्हें चुनने का अधिकार जीव को नहीं होता। जीव अपनी जाति को बदल भी नहीं सकता। ईश्वर भी वर्तमान जीवन में जाति परिवर्तन नहीं कर सकता। आयु प्रायः जाति के अनुसार ही प्राप्त होती है, किंतु इसे घटाया बढाया जा सकता है- स्वयं भी तथा अन्यों के द्वारा भी। बहुत से लोग जिनमें आर्य विद्वान भी सम्मिलित हैं यह मानते हैं कि ईश्वर द्वारा निर्धारित आयु से पूर्व किसी प्राणी की मृत्यु नहीं हो सकती। यह भ्रम वेद-शास्त्रों के गहन अनुशीलन तथा चिन्तन न होने से ही है। वेदों के अनेकों मंत्रों में दीर्घ जीवन तथा सुख समृद्धि की प्राप्ति हेतु प्रार्थना की गई हैं। संध्या के समय हम नित्य ''जीवेम शरदः शतम्'' अर्थात् हम सौ वर्षो तक जीवित रहें- ऐसी प्रार्थना करते हैं। इसीप्रकार ''वयं स्याम पतयो रयीणाम्'' के द्वारा धनैश्वर्य-वृद्धि की प्रार्थना है। निश्चित ही आयु तथा धन-वृद्धि इसी जन्म के लिए अभिप्रेत है, आगामी जन्म के लिए नहीं। यदि आयु तथा भोग को अपरिवर्तनीय मान लें तो वेदमंत्रों को निरर्थक मानना पड़ेगा। एक प्रसिद्ध संस्कृत का श्लोक हैं-

''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोऽपि सेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

अर्थात् बड़ो की सेवा करने वाले विनम्र व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं। यदि आयु का समय निश्चित माने तो और इस प्रकार की अन्य सूक्तियां निरर्थक मानना पड़ेंगी। गोहत्या रोकने के लिए गोभक्तों ने कई बार आन्दोलन किए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी प्रयास किए थे। यदि मृत्यु का समय निश्चित मान लें, तो गोहत्या भी ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार ही माननी पड़ेगी, तब उसे रोका भी नहीं जा सकता।

योगदर्शन में इस विषय से संबंधित एक सूत्र हैं- ''क्लेशमूलः कर्माशयों दृष्टा दृष्टजन्मवेदनीयः''। क्लेश अर्थात् अविद्या आदि के कारण कर्मो से जो कर्माशय (कर्म संस्कार) बनते हैं, उन्हीं के आधार पर वर्तमान और आगामी जन्मों में कर्मफल (आयु तथा सुख दुख) प्राप्त होते हैं। एक व्यक्ति स्वास्थ्य संबंधी नियमों पर चलते हुए आहार, निद्रा, व्यायाम आदि को उचित रूप से अपनाता है, तो उसकी आयु भी बढ़ेगी और सुखी भी रहेगा। दूसरा व्यक्ति गलत आहार और आचरण करता है तो रोगादि से दुखी भी होगा और शीघ्र मृत्यु के मुंह में भी जा सकता है, जैसा तम्बाकू, शराब आदि का अधिक सेवन करने वालों के साथ होता है। इनके अतिरिक्त कुछ कर्मो के फल वर्तमान जीवन में भी प्राप्त होते हैं जिनसे आयु तथा भोग प्रभावित होते हैं। यद्यपि अधिकांश कर्मो के फल आगामी जन्मों में ही मिलते हैं।

इस प्रकार कर्म की तीन अवस्थायें होती है १. जो कर्म मनुष्य द्वारा कर दिए गए (शारीरिक, वाचिक या मानसिक) उन्हें क्रियमाण कहते हैं। २. जिन किए गए कर्मो का फल प्रतीक्षित है उन्हें संचित कहते हैं। और ३. जिन का फल प्राप्त हो रहा है उन्हें प्रारब्ध या भाग्य कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि कर्मफल ही भाग्य है, जिसका निर्माता स्वयं कर्मकर्ता मनुष्य होता है। परीक्षा देने वाला विद्यार्थी जैसे परीक्षाफल के लिए स्वयं उत्तरदायी होता है वैसे ही भाग्य के लिए स्वयं जीव को उत्तरदायी मानना चाहिए। उसके लिए ईश्वर या भाग्य को कोसना उचित नहीं।

कर्म और कर्मफल के पारस्परिक सम्बन्ध को जानने के साथ-साथ कर्म और कर्म फल में अंतर को समझना भी आवश्यक है। कभी कभी कर्म को कर्मफल समझने की गलती भी हो जाती है। जैसे कोई हत्यारा किसी भद्र पुरूष की हत्या कर दे तो मान लिया जाता है कि उस व्यक्ति के भाग्य में ही ऐसी अकाल मृत्यु लिखी थी। मेरे प्रारंभिक यौवन काल में मेरे घर में चोरी हो गई जिसमें हमारे सारे वस्त्र, आभूषण, बर्तन, नकदी आदि चले गए। मैं सपरिवार घर खाली छोड़कर नगर से बाहर एक आर्य समाज के उत्सव में सम्मिलित होने चला गया था। परिवार के सभी लोग दुखी हुए। तब मेरी मां ने आर्य समाज के तत्कालीन एक प्रसिद्ध उपदेशक से प्रश्न किया कि ''प्रताप मुझ जैसे धार्मिक को ऐसा आघात क्यों लगा? विद्वान (?) उपदेशक ने उत्तर दिया कि प्रताप के भाग्य में ही चोरी होना था। धार्मिक सदाचारी होने के कारण यह घटना अभी हो गई तो शेष जीवन में क्षतिपूर्ति कर लेगा अन्यथा सेवाकाल में अंतिम चरण में होती तो अधिक अपूर्णनीय क्षति होती। यह समाधान शंका को और बढ़ाने वाला है। वस्तुतः चोरी मेरे कर्म का फल न होकर चोर द्वारा किया गया पाप कर्म था। हां वह लापरवाही मेरे कर्म का परिणाम कहा जा सकता है।

संसार में जो कुछ सुख दुख मिलता हुआ दिखलाई देता है वह कर्मफल ही नहीं होता, अपितु कर्म परिणाम या कर्म का प्रभाव भी हो सकता है। यज्ञ करते समय शरीर या वस्त्र जल जाना कर्म फल तो नहीं हो सकता। मान लीजिए एक शराबी व्यक्ति ने नशे में कोई अपराध कर दिया तो उसका दण्ड जो न्यायाधीश द्वारा मिलेगा वह कर्म फल हुआ। बहुत शराब पीने से जो रोग होगा वह कर्म का परिणाम है और शराब के कारण निर्धनता आ जोन से पुत्र पढ़ाई न कर सका एवं पुत्री का विवाह न हो सका व पूरा परिवार अपमानित होता रहा यह सब कर्म का प्रभाव है। कर्म का फल ईश्वर या न्यायाधीश द्वारा ही दिया जा सकता है, जबकि कर्म का परिणाम तो स्वतः भी मिल जाता है। फल और परिणाम कर्म करने वालों को ही मिलता है, जबकि कर्म का प्रभाव अन्य को प्राप्त होता है। बुरे शासक के राज्य में प्रजा दुखी और अच्छे शासक के राज्य में प्रजा सुखी रहती है। ये कर्म का प्रभाव ही है। लोग बहुधा कहते है कि आज के युग में ईमानदार, धर्मात्मा कष्ट में और बुरे बेईमान सुखी हो रहे हैं। ये कर्म का ही प्रभाव कहा जायेगा। इसीलिए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को सज्जन और श्रेष्ठ बनाओ- ऐसा उपदेश है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या भाग्य का कोई महत्व नहीं? उसे बदला जा सकता है? तो उत्तर स्पष्ट है कि ''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' अर्थातृ किए जा चुके अच्छे बुरे कर्मो का फल भोगना ही पड़ता है। किसी भी उपाय से उससे बचा नहीं जा सकता। ईश्वर क्षमादान नहीं करता। अतः किए गए कर्मो के बारे में चिन्ता करके भी हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। हम केवल भविष्य तथा वर्तमान में शुभ कर्म करके अनागत दुःखों से बच सकते हैं। ''हेयं दुखमनागतम्' । इसके लिए शुभ और अशुभ कर्मो की ठीक-ठीक जानकारी होना आवश्यक है। ज्ञान न होने पर उल्टा ज्ञान होने से मनुष्य पाप को भी पुण्य समझ कर उसे स्वीकार कर लेता है। इस संबंध में एक निष्पक्ष कसौटी बतलाई गयी है- ''आत्मना प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।'' अर्थात् जो व्यवहार हमें अच्छा नहीं लगता वह हम दूसरों के साथ न करें।'' इसमें न किसी सम्प्रदाय के लिए पक्षपात है और न किसी विचारधारा के। चूंकि भाग्य अर्थात् कर्मफल के बारे में ठीक-ठीक जानकारी कर पाना संभव नहीं है, अतः अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण पुरूषार्थ से करते रहना ही श्रेयस्कर है। जो भाग्य या कर्मफल की चिंता किए बिना सर्वहिताय शुभ कर्मो में प्रवृत्त रहते हैं, वहीं कर्मयोगी कहलाते हैं। गीता में कहा गया हैं- ''युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।।''

अर्थात् कर्मयोगी फल प्राप्ति के लिए हाय-हाय न करने के कारण स्थिर शांति प्राप्त करता है, इसके विपरीत योगरहित मनुष्य नाना प्रकार की कामनाओं से आसक्त होने के कारण कामना द्वारा बांध लिया जाता है।

मो. - ६४५०००१४४१

ईश्वर सहित सभी ऋषि वेद प्रचारक रहे हैं

महर्षि दयानन्द का वेद प्रचार ब्रह्मा से जैमिनी ऋषि पर्यन्त प्रचलित वेद प्रचार परम्परा का ही निर्वाह

मनमोहन कुमार आर्य

कल्प के आरम्भ से पूर्व ईश्वर ने प्रलय अवस्था को समाप्त कर सत्, रज व तम गुणों वाली प्रकृति के सूक्ष्म कणों से पूर्व कल्प के सदृश्य इस सृष्टि का निर्माण किया तथा जीवात्माओं को उनके पूर्व कल्प में पुण्य व पाप कर्मो के कर्माशय के अनुसार मनुष्य व अन्य प्राणी योनियों में जन्म दिया। मनुष्यों को ज्ञान की आवश्यकता थी, अतः परमात्मा ने अपने मनुष्योचित ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद को चार अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामी ऋषियों को दिया। यह चार ऋषि पूर्व कल्प के चार सबसे अधिक पवित्रात्मा मनुष्य थे। ईश्वर प्रदत्त इस वेद ज्ञान से मनुष्य सृष्टि के आरम्भ से ही ज्ञान सम्पन्न होकर वेदाज्ञानुसार जीवन व्यतीत करता रहा। इस प्रकार आदि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान देने से ईश्वर को वेदों का प्रचारक कहा जा सकता है। वेद प्रचारक का अर्थ सत्य ज्ञान का प्रचार करने वाला होता है और वह सर्वप्रथम ईश्वर ही है। सृष्टि में देखने में आता है कि सभी मनुष्य समान रूप से ज्ञानी *नहीं हो सकते। अतः ईश्वर ने* प्रथम चार सबसे अधिक पवित्र ऋषियों की आत्माओं में वेदों का ज्ञान दिया और उन पर प्रेरणा द्वारा यह उत्तरदायित्व सौंपा कि वह वेदों का ज्ञान ब्रह्मा जी को दें और यह सब मिलकर इस ज्ञान को अन्य सभी स्त्री व पुरूषों सहित आगामी पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपते जाये। यहीं से मनुष्यों व ऋषियों द्वारा वेदाध्ययन व वेद प्रचार का शुभारम्भ सृष्टि के आरम्भ में ही हो गया था। आदि चार ऋषियों तथा ब्रह्मा जी का मुख्य कार्य वेदों का प्रचार करना ही था। वेदों के प्रचार के लिए सबसे प्रथम कर्तव्य मनुष्य की संतानों को आचरण व व्यवहार सहित ओ३म् का उच्चारण एवं अर्थ सहित गायत्री मंत्र सिखाना होता है। इसके पश्चात संतानों के ८ वर्ष व कुछ अधिक आयु में गुरूकुल में आचार्य व आचार्याओं के पास भेजकर उन्हें वर्णमाला का ज्ञान कराकर व्याकरण आदि ग्रंथों को पढ़ाया जाता है। इस प्रकार उत्तरोत्तर अध्ययन करते हुए वेदों का अध्ययन कराना ही वेदों का प्रचार है। इस प्रकार गुरूकुलों के सभी आचार्य व आचार्याएं भी एक प्रकार से वेद प्रचारक ही होते थे। बालक बालिकाओं के अतिरिक्त समाज के युवा व प्रौढ़ आयु के वेद ज्ञान विहीन लोगों को उपदेश व सत्यार्थ प्रकाश के समान पुस्तकों के द्वारा ज्ञान प्रदान करना भी वेद प्रचार ही है। महर्षि दयानन्द ने अपने समय में इन दोनों प्रकारों से लोगों को वेद का ज्ञान कराया।

उपलब्ध वैदिक साहित्य के आधार पर यह पता चलता है कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल पर्यन्त जो वर्तमान समय से ५,२४० वर्ष पूर्व हुआ था, ऋषि परम्परा से वेदों का प्रचार प्रसार देश व विश्व में सामान्य रूप से चलता रहा। इस वेद प्रचार का ही परिणाम था कि सारे संसार में एक ही मत व धर्म अर्थात् वेद-वैदिक धर्म ही सर्वत्र प्रचलित था। महाभारत युद्ध में सभी देशों के सैनिकों ने युधिष्ठर व दुर्योधन के पक्ष में भाग लिया जिससे जान व माल की भारी क्षति हुई। इस महाभारत युद्ध से आर्यावर्त भारत व विश्व के अन्य सभी देशों में शिक्षा व्यवस्था अर्थात् वेदाध्ययन बाधित हुआ और ऋषि परम्परा समाप्त होकर अविद्या व अज्ञान का विस्तार होने लगा। ऋषि परम्परा के अवरूद्ध होने से वेद प्रचार व वेदाध्ययन बंद हो गया जिसका परिणाम यह हुआ कि अज्ञान व स्वार्थवश लोगों ने वैदिक *मान्यताओं को तोड़ा-मरोड़ा* जिससे अवैदिक व वेद विरूद्ध मान्यताओं का प्रचार-प्रसार होने लगा और कुरीतियों का विस्तार होने लगा। इस अज्ञान व कुरीतियों के कारण देश विदेश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, सामाजिक विषमता, जन्मना जाति प्रथा आदि कुरीतियां उत्पन्न हो गयी। यद्यपि महाभारत काल के बाद देश में महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, स्वामी शंकराचार्य आदि अनेक आचार्य हुए परंतु वह सत्य वेदार्थ को प्राप्त करने में कृतकार्य न हो सके जिसका परिणाम यह हुआ कि अविद्या का प्रसार होता रहा। इसी के परिणाम स्वरूप देश पराधीन भी हुआ और अनेक मत-मतान्तर देश व विश्व में उत्पन्न हुए जिनसे मनुष्य ईश्वर की प्राप्ति व धर्म-कर्म से दूर होता गया और धर्म-कर्म के नाम पर मिथ्या विश्वासों के जाल में फंसता गया। ऐसा होते होते सन् १८२५ का आंग्ल वर्ष आ गया।

१२ फरवरी १८२५ को गुजरात प्रांत के राजकोट नगर से लगभग ५० किमी. की दूरी पर टंकारा नाम के ग्राम में एक ब्राह्मण परिवार में एक बालक का जन्म हुआ जिसे माता पिता ने मूलशंकर नाम दिया। यही बालक बाद में महर्षि दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द ने अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती की प्रेरणा व आज्ञा से वेद प्रचार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वेद प्रचार के अन्तर्गत उन्होंने देश भर में घूम घूम कर वेद व वैदिक धर्म का प्रचार किया और अवैदिक असत्य व अज्ञान पर आधारित मान्यताओं का खण्डन किया। खण्डन की गई मान्यताओं में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, बेमेल विवाह, बाल विवाह व तर्क व युक्ति रहित मत-मतान्तरों की अन्य अनेक मान्यतायें थी। असत्य के खण्डन के कार्य में केवल पौराणिक सनातन धर्म ही नहीं था अपितु संसार के सभी मत, सम्प्रदाय, पंथ व मजहब आदि थे। उन्होंने वेदों व धर्म का सत्य स्वरूप जहां अपने मौखिक व्याख्यानों, वार्तालापों, शास्त्रार्थो आदि में प्रस्तुत किया वहीं उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रंथ लिखकर भी वैदिक ज्ञान का प्रकाश व प्रचार किया। वह शायद ऐसे प्रथम धार्मिक महापुरूष है जिन्होंने वेदों व उनकी विरोधी मान्यताओं के खण्डन में कही व लिखी गई अपनी मान्यताओं को मौखिक व ग्रंथ रूप में लिखकर प्रस्तुत किया। वह सभी मत-मतान्तरों के आचार्यो व विद्वानों से शास्त्रार्थ करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे और स्वयं भी आमंत्रण व चुनौती देते थे। यही काम अपने अपने समय में स्वामी शंकराचार्य जी और अन्य मत प्रर्वतकों व उनके प्रचारकों ने भी किया। बड़ी संख्या में उन्होंने विभिन्न मतों के आचार्यो से शास्त्रार्थ चर्चायें की जिनका परिणाम सदैव उनके पक्ष में ही रहा। वह पहले ऐसे महर्षि थे जिन्होंने वैदिक धर्म के द्वारा संसार के सभी मनुष्यों अर्थात् धर्मावलम्बियों के लिए खोले। जो व्यक्ति वैदिक धर्म में आना चाहता था उसका स्वागत किया। देहरादून में जन्म से मुस्लिम मोहम्मद उमर नामक एक मुस्लिम परिवार की उसके निवेदन करने पर शुद्धि करके उसे वैदिक धर्म में दीक्षित किया और उसे अलखधारी नाम दिया। यह व्यक्ति सारा जीवन आर्य धर्म में रहा और वैदिक आचरण करता रहा। पूर्व मत व धर्म के इस अलखधारी बंधु को जिन लोगों ने हतोत्साहित किया था उनका भी उत्तर इस व्यक्ति ने अपने ज्ञान व विवेक तर्क व प्रमाणों से दिया जिससे सबके मुंह बंद हो गये थे।

महर्षि दयानन्द को देखकर हमें ज्ञात होता है कि उनका मुख्य कार्य वेदों के सत्य अर्थो से संसार के सभी लोगो को परिचित कराना। इसके लिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि अनेक ग्रंथ लिखें और मौखिक प्रचार भी किया। यही बात हम सृष्टि के आरम्भ में महाभारत काल तक हुए सभी ऋषियों में देखते हैं। यह सभी ऋषि ब्रह्मचारियों को वेद का ज्ञान पढ़ाया करते थे, आवश्यकता-नुसार ग्रंथ लिखा करते थे तथा मौखिक प्रचार व शास्त्रार्थ आदि किया करते थे। इनके इन कार्यो के कारण देश व विश्व में कहीं कोई अवैदिक मत व पंथ सिर नहीं उठाता था। इसका प्रमाण है कि महाभारत काल तक परम्परा का अंत होने पर सर्वत्र अज्ञान का अंधकार छा गया। देश व संसार में अनेक अवैदिक मत उत्पन्न हुए जिनका मुख्य कारण अज्ञान था। इन मतों क अनुयायियों व प्रवर्तकों में ऐसा कोई मनुष्य नहीं था जो वेदों का ज्ञानी रहा हो और जो सभी मत प्रवर्तकों व आचार्यो को उचित परामर्श देकर मतों की अज्ञान व अंधविश्वासपूर्ण मान्यताओं को दूर कराता। यह कार्य महर्षि दयानन्द जी ने किया जिससे वह एकमात्र ईश्वरीय दूत सिद्ध होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने सम्मान, प्रशंसा,लोकैष्णा व वित्तैषणा से प्रभावित होकर यह कार्य नहीं किया अपितु लोकोपकार की भावना से प्रेरित होकर किया। ईश्वर दूत शब्दों के प्रयोग का यह अर्थ कदाचित नहीं है कि दयानन्द जी कोई विशिष्ट आत्मा थे। दयानन्द जी व सभी मनुष्यों की आत्मायें यहां तक की पशु व पशुओं की आत्मायें भी एक समान है परंतु ज्ञान व कार्य की दृष्टि में उन्हें ऋषि व ईश्वर का वेद संदेश संसार में प्रकाशित करने के कारण सच्चा दूत कहा है। उन्होंने ऐसा कोई भी कार्य नहीं किया जो उनके अपने अनुयायियों व देश के हित में हो व अन्य देशवासियों का अहित होता हो जैसा कि आजकल के प्रायः सभी मत हैं जो स्वहित को महत्व देते हैं और परहित की हानि भी करते हैं। अतः ईश्वर से आरम्भ वेदज्ञान व वेद प्रचार की परम्परा जो ऋषियों के माध्यम से महाभारत काल व कुछ बाद तक चली, उसी परम्परा को उन्होंने पुनर्जीवित किया। हम उनके द्वारा प्रदत्त वैदिक ज्ञान की निष्पक्ष आधार पर विवेचना करने पर यह पाते हैं कि आज विश्व में सत्य व सर्वागपूर्ण एक ही मत हैं और वह वेद मत व महर्षि दयानन्द द्वारा प्रचारित वैदिक धर्म ही है। सभी मतों की अच्छी बातों का इसमें समावेश है और जिन बातों का समावेश नहीं हो सका उसका कारण उनका सत्य न होना है। यहां यह भी उल्लेख कर देते हैं कि वेद प्रचार का *मुख्य उद्देश्य व अर्थ संसार के* लोगों को श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव व विचारों वाला वैदिक भाषा में इसे ही आर्य कहते हैं, बनाना है। यही कार्य मनुष्यों की इहलोक व परलोक में उन्नति का कारण होने से विश्व शांति का आधार भी है।

हम यह भी कहना चाहते हैं कि वेद प्रचार ही संसार में सभी मनुष्यों का एकमात्र सच्चा मानव धर्म हैं जो सभी के लिए माननीय व आचरणीय है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने यह नियम दिया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी मनुष्यों व श्रेष्ठ मानवों अर्थात् आर्यो का परम धर्म है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। *प्रत्येक काम सत्य और असत्य* को विचार करके करने चाहिए। सभी सज्जन पुरूषों की रक्षा, उन्नति और उनके प्रति प्रियाचरण और दुष्टों के बल की हानि, उनका नाश, अवनति और उनसे अप्रियाचारण सभी मनुष्यों को करना चाहिए। ऐसा करने से ही मनुष्य मनुष्य कहलाता है अन्यथा महर्षि दयानन्द की दृष्टि में वह मनुष्य नहीं कहला सकता। हम समझते हैं कि सभी पाठक हमारे इस विचार से सहमत होंगे कि ईश्वर से लेकर महर्षि दयानन्द तक हुए सभी ऋषि वेद प्रचारक ही थे। वेदों के ज्ञान की उच्चता या पराकाष्ठा एवं सिद्ध योगी होने के कारण ही सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य ऋषि व महर्षि कहलाते थे। देश व विश्व में सच्चे अर्थो में शांति तभी हो सकती है जब कि सारी मनुष्य जाति असत्य को त्यागकर सत्य मत वेदों को अपने जीवनयापन का आधार बनाये। वेदों का सत्य स्वरूप महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथों व वेदभाष्य में प्रस्तुत किया है तथा आर्य विद्वानों के वेदभाष्यों में भी प्राप्तव्य हैं। यह ज्ञान व विचार वहीं हैं जो सृष्टि के आदि काल से महाभारत काल तक विश्व भर में धर्म के रूप में प्रचलित रहे हैं। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

१६६, चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८ ००१
मो.-०६४१२६८५१२१

महर्षि के मानव मात्र पर चार विशेष उपकार

वैसे तो महर्षि दयानन्द के मानव मात्र पर सैंकड़ो नही सहस्त्रों उपकार हैं, जिनकी गिनती करना असंभव है। इस लेख में चार उपकारों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं, जिनको हम लोगों ने लगभग पांच हजार वर्षो में प्रायः भुला दिया था।

१. सबका एक धर्म वैदिक धर्म ही है- सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक एक ही धर्म वैदिक धर्म को ही विश्व के सभी लोग मानते रहे। लगभग पांच हजार वर्ष पहले महाभारत का भीषण युद्ध हुआ। विश्व भर के सभी राजा, महाराजा, योद्धा, विद्वान व आचार्य युद्ध में काम आ गये। इस स्थिति में अविद्वान, स्वार्थी लोग ही विद्वान समझे जाने लगे और उन स्वार्थी लोगों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत-मतान्तर प्रचलित कर दिए जिससे लोग धर्म भ्रमित हो गये और विश्व में अज्ञान, अंधविश्वास व पाखण्ड का ही राज्य स्थापित हो गया और वैदिक धर्म प्रायः लुप्त हो गया और लोगो ने अंधविश्वास पाखण्ड रूपी अधर्म को ही धर्म मान लिया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में कठोर तपस्या करके अनेक दुखों व कष्टों को सह कर अपने सद्गुरू विरजानन्द की गोद में तीन साल बैठ कर महाभाष्य व अष्टाध्यायी का गहन अध्ययन करके वेदों के सही अर्थ निकाल कर विश्व में वेदों का पुनः प्रकाश किया और करीब पांच हजार वर्षो से जो लोग वैदिक धर्म को भूल गये थे और अनेक मत-मतान्तरों में फंस गये थे उनको पुनः वैदिक धर्म में लाकर उनके जीवन को सफल बनाने के लिए एवं उनके जीवन में सुख शांति लाने के लिए जो वैदिक धर्म पर चलने से ही संभव है, उनको वैदिक धर्म पर चलने की प्रेरणा दी और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। जो जीव का अंतिम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लए ईश्वर, जीव को मनुष्य योनि में भेजता है।

महर्षि दयानन्द के आने से पहले लोग अनेक मत-मतान्तरों में बंटे हुए थे उनके ग्रंथ भी अलग अलग थे जो सभी मनुष्यकृत थे। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी होने से उनके बनाये ग्रंथों में भी अलगाववाद का होना आवश्यक है परंतु महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतला कर विश्व को यह बतलाया कि मानव मात्र का एक ही धर्म है वह है वैदिक धर्म और एक ही धर्मग्रंथ वेद है। इन्हीं को मानने से विश्व का कल्याण है अन्यथा परस्पर के भेद भाव रहना निश्चित है।

२. सब का एक ही उपास्य देव ''ओ३म्'' है- महाभारत युद्ध से पहले एक ही धर्म वैदिक धर्म था और एक ही उपास्य देव ओ३म् था। महाभारत के बाद अज्ञानी स्वार्थी लोगों ने जहां अनेक मत-मतान्तर चला दिये वहीं अनेक उपास्य देव भी चला दिये। अनेक मतो में शैव, वैष्णव व शाकृ मुख्य थे। शैवों ने शिव को, वैष्णव ने विष्णु को और शाकों ने दुर्गा, काली, भैरव आदि को उपास्य देव मानना प्रारम्भ कर दिया। ब्रह्मा का सृष्टिकर्ता, विष्णु को पालन कर्ता और शिव को संहारकर्ता बतलाकर तीनों को उपास्य देव मान लिया। श्री राम और श्री कृष्ण को अवतार बतलाकर ईश्वर के रूप में ही उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया। इस प्राकर अनेक देवी देवताओं की उपासना होनी आरम्भ हो गई। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में यह लिखकर भ्रम समाप्त कर दिया कि इन सभी देवताओं के नाम ओ३म् के गुणों व कर्मो के नाम है, इसलिए एक ओ३म् की उपासना करने से ही सभी देवताओं की उपासना हो जाती है। ''ओ३म्'' ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है वही पालन करने वाला है और वहीं संहार करने वाला है इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों ही देव ''ओ३म्'' में ही समाहित हो जाते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में ''ओ३म्'' में एक सौ नामों का वर्णन है। इसलिए महर्षि ने बताया कि किसी अन्य देवता की उपासना न करके केवल ''ओ३म्'' की ही उपासना उसके गुणों का वर्णन करते हुए, उसके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प करते हुए संध्या द्वारा करनी चाहिए। यह बतला कर महर्षि ने सभी मनुष्यों को जोड़ने का काम करके मनुष्य मात्र पर बड़ा उपकार किया है।

३. एक ही नाम आर्य था- सृष्टि के आरम्भ में जितने भी मनुष्य थे वेद ने उनको आर्य नाम से सम्बोधित किया है और वेदों में लिखा है-''अहं भूमिम् अददाम आर्याय'' इसका अर्थ है कि मैं ईश्वर धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वालों के लिए पृथ्वी के राज्य को देता हूँ यानि धर्मयुक्त गुण कर्म स्वभाव वाले आर्य ही इस पृथ्वी का आनन्द ले सकते हैं और वेदानुकूल चलते हुए अपने अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में केवल दो किस्म के ही मनुष्य थे गुण, कर्म स्वभाव से अच्छे व्यक्तियों को आर्य कहा जाता था और इसके विपरीत स्वभाव वालों को अनार्य कहा जाता था। अनाड़ी शब्द अनार्य का ही विकृत रूप है। महाभारत तक यही प्रथा चलती रही। रामायण, महाभारत की फिल्मों में हमने देखा कि सीता ने श्री राम को सदैव आर्य पुत्र और द्रौपदी ने अर्जुन को सदैव आर्यपुत्र के नाम से सम्बोधित किया है।

महाभारत तक हमारा नाम आर्य और हमारे देश का नाम आर्यावर्त था। इसके बाद मुसलमानों ने सिंधु नदी का अपभ्रंश करके हमें हिंदु और हमारे देश को हिंदुस्तान कहना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजों के आने पर हमें इण्डियन और हमारे देश को इण्डिया कहना आरम्भ कर दिया। महर्षि दयानन्द का हमारे ऊपर बड़ा ऋण है कि उन्होंने हमारा प्राचीन नाम आर्य हमें याद दिला दिया। वेद प्रचार करने तथा परोपकारी कार्यो को करने के लिए महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना सन् १८७५ में मुम्बई में की, इससे भी विश्व भर में वेद प्रचार तथा मानव कल्याण के कार्य काफी मात्रा में हो रहे हैं। यह भी महर्षि का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार हैं।

४- अभिवादन करने का एक ही तरीका नमस्ते हैं- वैदिक धर्म का प्रचार जब तक रहा तब तक सभी लोग परस्पर मिलने पर एक ही अभिवादन नमस्ते करते थे। बाद में वैदिक धर्म प्रायः लुप्त होने से अज्ञानतावश श्री राम और श्री कृष्ण को स्वार्थी लोगों ने इनको ईश्वर का अवतार बताना आरम्भ कर दिया, तब से जै श्री कृष्ण और राम-राम आदि अभिवादन के रूप में कहना आरम्भ हो गया। मुसलमान भाई वाले कुम सलाम और सलाम वाले कुम अभिवादन में कहते हैं। अंग्रेज भाई गुड मोरनिंग, गुड नाइट समय के अनुसार कहकर अभिवादन करते हैं जो अपने हृदय का प्रेम प्रदर्शन करने का उपयुक्त तरीका नहीं जान पड़ता है। महर्षि ने वेदों के आधार पर वही प्राचीन अभिवादन नमस्ते का प्रयोग करने का आग्रह किया है। आर्य जगत में एक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान पं. अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च स्कालर हुए हैं जिनका अधिक जीवन कलकत्ता में ही बीता था। उनको आर्य समाज की तरफ से सन् १९३३ में शिकागों में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भेजा गया था। वहां चर्चा का विषय अभिवादन के लिए उपयुक्त शब्द क्या होना चाहिए यही था। सभी देश वालों ने अपने अपने अभिवादन शब्द के संबंध में बताया। अंत में पंडित अयोध्या प्रसाद जी ने नमस्ते की इतनी सुन्दर व सटीक व्याख्या की जिससे सभी देश वालों ने नमस्ते को ही अभिवादन के रूप में सबसे अधिक उपयुक्त समझा और इसी को सभी ने स्वीकार कर लिया। तभी से विश्व भर में नमस्ते का ही सब से अधिक प्रचलन है। महर्षि का अभिवादन में नमस्ते का पुनः प्रचलन करवाना मनुष्य मात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है।

खुशहाल चन्द्र आर्य
गोविन्दराम आर्य एण्ड संस
१८०, महात्मा गांधी रोड,
दो तल्ला, कोलकता-७०००००७
फोन- ०३३-२२१८३८२५, ०३३-६४५०५०१३

कुश को कहा जाता है यज्ञ का वस्त्र

पं. विमल किशोर आर्य
वैदिक प्रवक्ता

परमात्मा ने सृष्टि में जो भी पदार्थ का निर्माण किया है वह मनुष्य के लाभ के लिए ही किया है। परमात्मा ने सृष्टि में एक भी तृण बिना कारण के नहीं बनाया। पशु पक्षी, कीट, पतंगा, वनस्पतियों में क्या क्या गुण है ये वैदिक वैज्ञानिकों को पूर्णतया ज्ञात है। प्रायः हम लोग यज्ञ और मुण्डन संस्कार में शमी और कुशा का प्रयोग करते हैं कुश एक प्रकार की घास है तथा शमी एक वृक्ष होता है जिसकी पत्तियों का प्रयोग हवन् में करते हैं। ये मल शोषण करने की शक्ति प्रदान करती है। कुश की विशेषता का वर्णन परमात्मा एक वेद मंत्र द्वारा करता है- यत समुद्रो अभ्यक्रन्दत् पर्जन्यो विद्युतासह। ततो हिरणमयो विन्दुस्ततोदर्भो अजायत।। (अथर्व काण्ड १६ सू. ३०मं.५)

उत्पत्ति- जिस समय सोम समुद्र क्षुभित होकर उमड़ता है धन गर्जन के साथ बिजली चमकती है उस समय सोम बिंदु गिरती है। उन सोम बिंदुओं से दर्भ अर्थात् कुश की उत्पत्ति होती है।

घन गर्जन के समय विद्युत जब चमकती है तब प्रथम कथित सोम समुद्र से मेघ (बादल) के साथ मिलकर पृथ्वी पर आते है उस सोम बिंदुओं को कुश घास अपने में आत्मसात कर लेती है, उस सोम के विशेषांश को जज़्ब कर लेती है उसी सोम से कुश की उपज और वृद्धि होती है। इस सोम को पवमान भी कहते हैं। यह कुशा जल में आये हुए अग्नि से उत्पन्न हुए रूद्र वायु कार्बन डाइआक्साइड को नष्ट करके दूर असुर लोक में फेंक देती है। यह सारा कर्तव्य सोम बिंदुओं के प्रभाव का है जो परमेष्ठी से पृथ्वी तक आता है। अन्य दूसरे तृण सोम और विद्युत को इतना जज़्ब नहीं करते जितना यह कुशा घास जज़्ब करती है। प्रायः लोग पहले कुश की ही आसनी यज्ञ वेदी के चारो तरफ बिछाते थे और उस पर यज्ञ और संध्या आदि किया करते थे परंतु अब उसका स्थान प्लास्टिक की चटाई ने ले लिया है कुशा की आसनी चटाई पर बैठने से कैंसर के रोग को दूर करती है और शरीर में झुनझुनी पैरों को शितली को रोकता है आलस्य का निदान करता है इतना ही नहीं वरन् पृथ्वी के तत्व को अग्नि के तत्व को जज़्ब करके शरीर में पहुंचाने का कार्य कुशा करती है। मुंडन संस्कार में कुश घास का संयोग बालक के बालों से सोम की प्राप्ति और प्रथम बार लोहमय छुरे के संयोग से उत्पन्न हुए आसुर प्राणों के निवारणार्थ किया जाता है। इतना ही नहीं सूर्य चन्द्रादि ग्रहण के समय भी सौर और सौम्य प्राणों पर अन्धकार और अन्य प्राणों का आक्रमण होता है जो असुर कहाते हैं उनका शमन कुशा के द्वारा जल आदि में डालकर कदाचित किया जाता था यह कुशा यज्ञ वेदी के चारों ओर बिछाई जाती थी इसको यज्ञ का वस्त्र कहा जाता है परंतु आज शैने शैने लोग भूलते जा रहे है जब भी कोई पौराणिक पंडित कथा कराने आते है तो कुशा अर्थात् यज्ञ का वस्त्र के संबंध में कोई जानकारी नहीं देते अपितु नाम मात्र के लिये विवाह संस्कार आदि में जल छिड़कने अथवा अंगुलियों में ही जिसे पवित्री कहते हैं पहना कर काम चला लेते हैं।

विराम खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ
०७४६६६६८२६४

महर्षि दयानन्द और मोहनदास गांधी

-नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आर्यावर्त ऋषियों मुनियों एवं महापुरूषों की पावन भूमि है। भारत के बराबर ऋषि, मुनि, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, ईश्वर-भक्त, धर्मात्मा, विद्वान, दार्शनिक, देवपुरूष, वीर, बहादुर, धर्मशहीद, क्रांतिकारी नेता किसी भी अन्य देश में पैदा नहीं हुए।

आपसी फूट, अज्ञानता एवं वेद विरूद्ध चलने के कारण गौतम, कपिल, कणदि, जैमिनि, पातंजलि विश्वामित्र, वशिष्ठ, हरिशचन्द्र, अश्वपति, चन्द्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, भोज जैसे महान पुरूषों के प्यारे देश का पतन हुआ और इस वीर प्रसविनी भारत भूमि को लगभग एक हजार वर्ष तक दासता का सामना करना पड़ा।

भारत माता की स्वतंत्रता के लिए राणा सांगा, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, वीर बन्दा बैरागी ने मुसलमानों से जीवन भर संघर्ष किया किंतु वे न चाहते हुए भी भारत को स्वतंत्र नहीं करा पाये। उनके बाद टंकारा गुजरात में एक महान देशभक्त सन्यासी स्वामी दयानन्द ने जन्म लिया जिसने स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मथुरा नगरी में वैदिक ज्ञान प्राप्त किया व वेदों की ओर लौटो व स्वतंत्रता का जयघोष किया।

स्वामी दयानन्द के प्रयास से नाना साहब, लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, कुंवर सिंह, राव तुलाराम, नाहर सिंह, मंगल पांडे, पं. नन्द किशोर गौड़, बहुदुशाह जफर आदि वीर सपूतों ने सन् १८५७ ईश्वी में अंग्रेजों से घोर युद्ध किया किंतु गोरखों और सिक्खों ने साथ नहीं दिया इसलिए ये महावीर अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके।

इसके पश्चात बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, स्वामी श्रद्धानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा, महादेव गोविन्द राणाडे, दादाभाई नौरोजी, सोहनलाल पाठक, पं. बालमुकंद, रास बिहारी बोस, अवध बिहारी बोस, सरदार अर्जुन सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजगुरू, सुखदेव, भगत सिंह, खुदीराम बोस, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि अनेक क्रांतिकारी नेताओं क बलिदान से १५ अगस्त १९४७ ईश्वी में भारत आजाद हुआ था तथा अंग्रेज देश छोड़कर इंग्लैंड भाग गए।

अब विचार करो फिर सारा श्रेय मोहनदास गांधी को क्यों दिया जाए? खेद का विषय है कि भारत के इतिहास में महान देशभक्त वीरों का वर्णन क्यों नहीं दिया गया? आजादी का श्रेय मोहनदास गांधी और मोतीलाल नेहरू परिवार को देना घोर अन्याय है, व जिसे सहन करना महापाप है।

गांधी जी ने बाल गंगाधर तिलक का विरोध किया, स्वामी श्रद्धानन्द को परेशान किया और उन्हें कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देना पड़ा। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के कांग्रेस अध्यक्ष चुने जाने पर डाक्टर पट्टाभिसीतारमैया की हार को अपनी हार बताया तथा नेता जी को सहयोग नहीं दिया इसके परिणाम स्वरूप उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया। गांधी इरविन समझौते के वक्त इरविन ने स्वयं गांधी से पूछा था कि बताओ राजगुरू, सुखदेव व भगत सिंह के विषय में क्या करें? उस समय गांधी महाराज ने इन तीन भारत मां के वीर सपूतों को फासिस्ट बताया था। सज्जनों, थोड़ा विचार करो कि क्या ऐसे व्यक्ति तो राष्ट्र पिता माना जाये? सरदार वल्लभभाई पटेल स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री चुने जा रहे थे किंतु गांधी जी ने जिद करके जवाहर लाल को देश का प्रधानमंत्री बनवा दिया। जिद करके पाकिस्तान को पचपन करोड़ रूपये दिलवा दिया, देश का बंटवारा करा करके भी भारत में मुसलमानों को रोक लिया। उस समय भारत में मुसलमानों की आबादी बाईस प्रतिशत थी किंतु उन्हें देश की तीस प्रतिशत उपजाऊ भू भाग व पश्चिमी पाकिस्तान के रूप में दे दिया और फिर उन्हें यहां रख लिया जो रोजाना देशद्रोह के गीत गाते हैं।

डाक्टर पट्टाभिसीतारमैया ने कांग्रेस का इतिहास लिखा है जिसमें उन्होंने साफ लिखा है कि देश की आजादी के लिए जेल जाने वाले, काले पानी की सजा पाने वाले और फांसी की सजा पाने वालों में ८० प्रतिशत आर्य समाजी थे।''

वास्तव में देखा जाये तो स्त्री शिक्षा, स्वदेशी भाषा, अछूतोद्धार, गौरक्षा, कर्म प्रधानता का पाठ संसार को महर्षि दयानन्द महाराज ने ही पढ़ाया था। आज भी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बनाया गया आर्य समाज देश-धर्म, जाति एवं संसार की सेवा कर रहा है। मोहनदास गांधी को महात्मा की उपाधि सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द जी के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ने गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार के वार्षिक उत्सव पर पधारने पर दी थी। वस्तुतः आर्य समाज के बराबर परोपकारी कार्य कोई भी संस्था नहीं कर रही है।

आर्य समाज के नेताओं ने आजादी मिलने के समय राजनीति में खुलकर भाग न लेने की भयंकर भूल कर दी जिससे देश की सत्ता चालाक लोगों के हाथ में आ गयी जिन्होंने देश भक्त आर्य वीर शहीदों की कुर्बानी को भुला दिया और मनमाने ढंग से कार्य करने लगे, इसी का परिणाम है कि आज पूरे भारत में उग्रवाद-आतंकवाद का बोलबाला है तथा देश की जनता अब भारी दुखी है।

देश भक्त आर्य वीरों, अब सोने का समय नहीं है इसलिए अंगडाई लेकर उठो और सकल संसार को बता दो कि मोहनदास गांधी भारत के राष्ट्रपिता नहीं अपितु जगतगुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती ही भारत के राष्ट्र पितामह थे। याद रखो! अगर तुम अब भी न जागे तो संसार तुम्हारी हंसी उडायेगा इसलिए वेद प्रचार में जुट जाओ और पंडित लेखराम, मुनिवर गुरूदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, सरदार अर्जुन सिंह, वीर लाला लाजपत राय बनकर भारत को सकल विश्व का गुरू बना दो और संसार में अमर हो जाओ।

-आर्य सदन, बहीन, जनपद-पलवल
हरिद्वार
चलभाष- ०९८१३६४५७७४

विगत के पृष्ठों से-

मेजर ध्यानचन्द की राष्ट्रभक्ति

आज बर्लिन में बड़ा अभूतपूर्व समारोह है। एक भारतीय सेनाधिकारी का इस देश का सर्वेसर्वा हिटलर अभिनन्दन करेगा। बड़ी बात है। एक पराधीन देश के सामान्य सैनिक अफसर ने ऐसा कौन सा पौरूष किया, चमत्कार कर दिखलाया कि जो शख्स दुनियां को झुकाने पर अमादा है।

वह क्षण भी आ गया। विपुल जन-संकुल समुदाय के बीच गाने-बजाने से गुंजित व्यापक समारोह में वह भारतीय धीर किंतु दृढ़ पगों से आकर हिटलर के समक्ष खड़ा हुआ है। सामान्य व्यक्तित्व वाला वह पुरूष हिटलर से हाथ मिला रहा है और आत्म गौरव से उसका प्रशस्त्र ललाट देदीप्यमान हो रहा है। हिटलर बहुत आश्चर्याभिभूत होकर कुछ एकटक उस भारतीय को देखता रहा, फिर एक सज्जित स्वर्ण पदक उस भारतीय के हाथों में ससंभ्रम रख देता है। भारतीय सुशीलतावश मंद स्मिति करता हुआ किंचित अभिवादन की मुद्रा में झुकता है। अतः हिटलर कुछ सोच उसके समक्ष प्रस्ताव रखता है-

मेजर, तुम हिन्दुस्तान छोड़ दो, जर्मनी चले आओ। हम तुम्हें आमंत्रित करते हैं।

धन्यवाद! लेकिन किस लिए? आप मुझे अपने देश में बुलाना चाहते हैं? भारतीय की जिज्ञासा मुखरित होती है।

'' ओ मेजर, तुम्हें अपने बीच पाकर हम जर्मन बहुत खुश होंगे, तुम्हें अपनी सेना का फील्ड मार्शल बनाएंगे, हिंदुस्तान में तो सिर्फ तुम मेजर का ही पद पा सके हो'' हिटलर ने कहा। विनम्र किंतु स्वाभिमान से पुनः मुस्करा उठा वह भारतीय बोला- ''आप के प्रस्ताव के प्रति आभारी रहूंगा किंतु मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि उस स्थिति में मैं अपने प्रिय स्वदेश की कुछ भी सेवा न कर सकूँगा।''

फिर एक दिन जब वही भारतीय स्वदेश लौटा और उसे एक बार पटियाला जाने का मौका मिला तो उसने अत्यन्त सहज भाव से हिटलर द्वारा प्रदत्त वहीं पदक वहां के नौजवान खिलाड़ियों को समर्पित कर दिया। उससे पूछा गया ''इसे आप क्यों दिए दे रहे हैं? यह तो आपकी निजी धरोहर है, यश की धरोहर तब उसने कहा - निःसंदेह यह यश की धरोहर ही है किंतु यह मेरी व्यक्तिगत नहीं पूरे राष्ट्र की अमानत है, उसे मै। आज राष्ट्र को सौंपता हूँ।''

वे थे हाकी के विश्वविख्यात जादूगर मेजर ध्यानचन्द, जिन्होंने सन् १९३६ के बर्लिन ओलम्पिक में अकेले ही ६ गोल कर दिये थे तथा भारत ने जर्मनी को परास्त किया था। ४०० से अधिक गोल करने वाले उस महान खिलाड़ी को अपने देश में अत्यन्त अभावग्रस्त रहकर अनेक ध्यानचंद निर्माण करना अभिप्रेत था जर्मनी में फील्ड मार्शल की पदगरिमा गवारा नहीं थी।

संकलनकर्ता-पं. हरीश कुमार शास्त्री

आर्य समाज चन्द्र नगर में वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज चन्द्र नगर, लखनऊ द्वारा आयोजित दिनांक १३ से १६ अगस्त, २०१५ तक वेद प्रचार कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। चारो दिन लखनऊ की अधिकांश आर्य समाजों से भारी संख्या में आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर समारोह को सफल बनाया। प्रातः ७ से ८:१५ बजे तक ऋग्वेद शतकम् के मन्त्रों से विशेष आहुतियां दी गयीं यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदव्रत अवस्थी व संतोष वेदालंकार थे जिन्होंने समयानुसार मन्त्रों की व्याख्या भी प्रस्तुत की। चौथे दिन यज्ञ की पूर्णाहुति ८:४५ पर हुयी।

सारगर्भित वेद प्रवचन डा. जयेन्द्र कुमार शास्त्री नोएडा के चारो दिन दोनों समय हुये। भजनों के द्वारा सारगर्भित विचार श्री कुलदीप विद्यार्थी बिजनौर ने चारो दिन दिये। जिनका श्रोताओं पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। चौथे दिन शान्तिपाठ के बाद ऋषिलंगर भी आयोजित हुआ। वैसे नित्य रात्रि सत्संग के बाद सहभोज भी होता रहा।

-सम्वाददाता

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४९६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा में मनाया गया ६८वाँ स्वाधीनता दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के प्रांगण में ६८वाँ स्वाधीनता पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस अवसर पर १५ अगस्त को प्रातः ६ बजे टूड़ियागंज अस्पताल के पूर्व वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. भानु प्रकाश आर्य के कर कमलों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तत्पश्चात् सभा के सभी कर्मचारियों एवं आर्यजनों ने सामूहिक राष्ट्रीय गान गाया।

उपस्थित राष्ट्र भक्तों को सम्बोधित करते हुये डॉ. भानु प्रकाश आर्य ने कहा कि आज हमारे भारत वर्ष को अंग्रेजी की गुलामी से छुटकारा प्राप्त हुए ६८ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं पर क्या हम वास्तव में आज स्वतंत्र हैं? सम्भवता नहीं। आइये आज वास्तविक स्वाधीनता को समझकर तदवत आचरण करने का व्रत लें तभी स्वाधीनता पर्व मनाना सार्थक होगा।

इसके अतिरिक्त विमल किशोर आर्य 'वैदिक प्रवक्ता' ने राष्ट्रीय ध्वज के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि जिस प्रकार परमात्मा अपना सूर्य रूपी ध्वज सारे विश्व में फहराता रहता है ठीक उसी प्रकार से प्रत्येक देश का अपना अपना राष्ट्रीय ध्वज होता है ध्वज राष्ट्र के आदर्शों और भावनाओं का प्रतीक होता है। राष्ट्रीय तिरंगा में तीन रंग होते हैं जिसमें नारंगी रंग त्याग का, श्वेत रंग पवित्रता का और हरा रंग हरियाली अर्थात् समृद्धि का द्योतक होता है आज हम सभी इस ध्वज के नीचे राष्ट्र को पवित्र और समृद्धि बनाने का संकल्प लें।

कार्यक्रम डा. सहदेव चौधरी सभा कार्याध्यक्ष-श्री सियाराम वर्मा, श्री भुवनचन्द्र पाठक, श्री कृष्ण मुरारी, आशुतोष चौहान, गोविन्द सिंह, रिसाल, शत्रोहन लाल शर्मा, अमर आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

-विमल किशोर आर्य

अनिवार्य शुभ सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यो के लिए ''चारों वेदों का हिन्दी भाष्य'' दिल्ली से मंगाया है इसका लागत मूल्य ३१००/- रूपये प्रति सेट है जो २५००/- में विशेष छूट पर मिलेगा आप स्वयं अथवा अपनी समाज के लिए मंगाना चाहते हैं तो अविलम्ब सभा कार्यालय को सूचित करें अथवा कार्यालय आकर प्राप्त कर लें आपको छूट पर प्राप्त होगा।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपने अपने समाज में रक्षाबंधन पर एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर यज्ञोपवीत संस्कार करें- यज्ञ करें विद्वानों द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन करें श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर श्री कृष्ण जी का आदर्श चरित्र लोगों तक पहुंचायें तथा कृत कार्यवाही से भी अवगत करायें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

पृष्ठ.१ का शेष भाग...

नासिका, राजसिक अंश से कर्मेन्द्रिय उपस्थ और तामसिक अंश से समान उत्पन्न हुए।
(''योगी का आत्म चरित से'')
सहायता-'
१. तन्मात्रा किसी तत्व का वह सूक्ष्मतम कण होता है जिसमें उसका विशेष गुण विद्यमान हो। उदाहरण-गन्धतन्माना पृथ्वी तत्व का वह सूक्ष्मतम कण जिसमें गंध का गुण विद्यमान है गंधतन्माना कहा जायेगा।

पृथ्वी तत्व के तन्मात्र का सात्विक अंश से अभिप्राय *ज्ञानवृद्धि करने वाले साधन से है। इसी प्रकार क्रिया वृद्धि करने* वाले अंश को राजसिक तथा स्थिति कारण अंश को तामसिक अंश कहते हैं।

वैदिक विज्ञान में पांच तत्व हैं-
१. पृथ्वी २. जल ३. अग्नि ४. वायु ५. आकाश
पांचों तत्वों का प्रयोग तीन प्रकार से होता है-
१. प्रखा - ज्ञान के लिए
२. प्रवृत्ति- क्रिया के लिए
३. स्थिति- स्थिरता के लिए

२५३, शिवलोक, कंकरखेडा
मेरठ
मो. ९९२७८८७७८८

घासीराम प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का प्रकाशन घासीराम प्रकाशन के नाम से संचालित नैतिक शिक्षा एवं अन्य धार्मिक पुस्तकें उपलब्ध हैं पुस्तकें प्राप्त कर लाभ उठावें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा,
५-मीराबाई मार्ग,
लखनऊ (उ.प्र.)

शोक संवेदना

१. आचार्य ओमव्रत जी शास्त्री उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ग्राम असावरी जिला-बु. शहर के परिवार में पूज्य पिता श्री हरस्वरूप सिंह आर्य की स्मृति में प्रेरणा दिवस का आयोजन किया जिसमें यज्ञ हुआ और क्षेत्र के समस्त आर्य जनों को आमंत्रित किया तथा अभिनन्दन भी किया। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार को अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम में वैदिक विद्वान एम.पी. यादव जी आर्य भजनोपदेशक जयवीर सिंह जी एवं श्री भानु प्रकाश जी उपस्थित थे। आचार्य जी ने स्मृति चिह्न भी प्रदान किए।

२. शौल्दा- किठौर मेरठ के पूर्व प्रधान सत्यपाल सिंह जी का निधन हो गया वे ८० वर्ष के थे। उनका शांति यज्ञ अरविन्द आचार्य ने सम्पन्न किया। गुलवीर सिंह, मानवीर सिंह, हंसवीर सिंह तीन पुत्र हैं। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का भी प्रवचन हुआ और उन्होंने सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पूर्व प्रधान संत शिरोमणि –शांति–सरलता–सौम्यता की प्रतिमूर्ति – स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज की शोक श्रद्धांजलि

आर्य समाज गुरूकुल पूठ गढ़ मुक्तेश्वर जिला हापुड में स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती जी के निधन की सूचना से पूरे आर्य परिवारों में शोक की लहर दौड़ गयी। आर्य समाज के मंत्री आचार्य दिनेश कुमार जी ने सभी सदस्यों को एकत्रित कर वृहद शांति यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के पश्चात स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में शोक सभा हुई। *जिसमें वक्ताओं ने विचार व्यक्त कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु* प्रार्थना की। पूज्य स्वामी जी ने अपने जीवन के संस्मरण सुनाये इस युग का स्वामी जी को ब्रह्मर्षि बताया। उन्होंने बताया कि हमारे पूर्वज जो परम्परा स्थापित कर गये हैं उसे पूरा करने के लिए स्वामी जी ने अपने जीवन की आहुति लगाई। सभी सदस्यों ने २ मिनट मौन रहकर आत्मा की अमरता के लिए प्रार्थना की।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभागभवेत।।

समस्त आर्य बंधु
राजीव आचार्य

आर्यवीर दल उ.प्र. की बैठक

आर्य वीर दल उ.प्र. की कार्यकारिणी की बैठक मेरठ आर्य समाज शास्त्री नगर में महेश योगी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के देहावसान पर शोक व्यक्त किया गया। सभी सदस्यों ने २ मिनट मौन रहकर अपनी श्रद्धांजलि प्रदान की। अधिकारियों में मुख्यरूप से स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी सभा मंत्री, आचार्य धर्मवीर सिंह मंत्री, रवि शास्त्री, व्यायाम शिक्षक, मा. ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, गाजियाबाद, डा. आर.पी. सिंह मेरठ, अशोक शर्मा मथुरा, मयंक आर्य मुरादाबाद, रवीन्द्र उत्साही पिलखुवा, ओम पाल सिंह अमरोहा, जिले सिंह आर्य मु.नगर, पूरनमल शास्त्री अलीगढ़, ओम प्रकाश शास्त्री आगरा, जन्मेजय शास्त्री गौ.बुद्ध नगर के अतिरिक्त पूरे प्रदेश की कार्यकारिणी के अंतरंग सदस्य विद्यमान थे।

मदन राठी, स. संचालक
आर्य वीर दल, उ.प्र.

निर्वाचन

आर्य समाज यमलार्जुनपुर कैसरगंज, बहराइच

प्रधान	::	श्री पेशकार सिंह
मंत्री	::	श्री राम बख्श पाल आर्य
कोषाध्यक्ष	::	श्री गंगा प्रसाद मौर्य

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।